VAISESIKA - INHERENCE

वैशेषिक - समवाय

By- Dr. Arun Kumar Sinha
Asso. Professor, Philosophy Department
Raja Singh College, Siwan
(For Part- 1 Hons./Subs. Students)

जब दो वस्तुओं में आयुतसिद्ध सम्बन्ध सदैव बना रहता है, तो वह समवाय है।आयुत का अर्थ एक दूसरे से कभी अलग न होना अर्थात दो वस्तुओं का सदैव एक साथ होना, जिनमें कभी अलगाव की स्थिति न बने तब उनका सम्बन्ध समवाय कहलाता है।समवाय भी विशेष की तरह नित्य, अनादि और अनन्त होता है।धागे और कपड़े बीच, गुलाब के फूल और सुगन्ध के बीच जो सम्बन्ध है वह समवाय सम्बन्ध है।समवाय सम्बन्ध नित्य होता है।कुर्सी और उसके अवयवों के बीच जो सम्बन्ध है वह नित्य है।कुर्सी के उत्पत्ति के पूर्व और नाश के बाद भी अवयव विद्यमान रहते हैं।

सामान्य अनेक होते हैं विशेष भी अनेक होते हैं। लेकिन समवाय एक ही होता है । प्रभाकर मीमांसा में समवाय भी अनेक माने गये है। प्रभाकर यह भी मानते हैं कि नित्य वस्तुओं का समवाय नित्य और अनित्य वस्तुओं का समवाय अनित्य होता है।लेकिन न्याय-वैशेषिक में एक ही नित्य समवाय माना गया है। न्याय- वैशेषिक का तर्क यह है कि भावकार्य समवाय- संबंध के द्वारा अपने उपादान कारणों में उत्पन्न होते हैं, इसलिए समवाय नित्य है ,और अगर समवाय को भी उत्पन्न माना जाए तो उसके लिए एक दूसरा समवाय मानना पड़ेगा दूसरे समवाय की उत्पत्ति के लिए तीसरा मानना पड़ेगा और इस तरह से आनावस्था हो जाएगी ।इसलिए ऐसी आनावस्था से बचने के लिए समवाय को नित्य मानना चाहिए। समवाय नित्य इस दृष्टि से है की कार्य को उत्पन्न या नष्ट किए बिना उसे उत्पन्न या नष्ट नहीं किया जा सकता। समवाय की नित्यता आपेक्षिक है। जबकि परमाणु निरपेक्ष रूप से नित्य होता है।

समवाय को और अधिक स्पष्ट रूप से समझने के लिये वैशेषिक के द्वारा प्रमाणित दूसरे सम्बन्ध संयोग पर भी विचार करना आवश्यक प्रतीत होता है।संयोग और समवाय वैशेषिक के मतानुसार दो प्रकार के सम्बन्ध हैं।समवाय(Inherence)एक नित्य सम्बन्ध है ,जबकि संयोग(Conjunction)एक अनित्य सम्बन्ध है। संयोग उन वस्तुओं का संबंध है जो एक दूसरे से अलग रह सकती हैं लेकिन कुछ समय के लिए परस्पर संयुक्त हो जाती हैं। कलम का दवात से संपर्क में आना संयोग है। यह संयोग थोड़ी देर तक रहता है संयोग से पहले कलम और दवात अलग-अलग थे और संयोग समाप्त होने के बाद भी वे एक दूसरे से

अलग रहेंगे। इस तरह संयोग एक आगंतुक संबंध है।इस तरह समवाय और संयोग के बीच जो अन्तर है, विभिन्नता है वह निम्न तरह से है : -

1 समवाय को वैशेषिक दर्शन में स्वतंत्र पदार्थ के रूप में माना गया है और वह भी छठा भावात्मक पदार्थ के रूप में जबकि संयोग को स्वतन्त्र पदार्थ के रूप में नहीं माना गया है। गुण के चौबीस प्रकार में से संयोग भी एक प्रकार है।

2 समवाय नित्य(eternal)सम्बन्ध है पर संयोग अनित्य(temporary)सम्बन्ध है।द्रव्य और गुण के बीच का सम्बन्ध,मनुष्य और मनुष्यत्व के बीच का सम्बंध समवाय सम्बंध है जो नित्य है।संयोग सम्बंध दो पृथक वस्तुओं के संयुक्त होने पर होता है, जैसे रेलगाड़ी और प्लेटफॉर्म का सम्बंध जो रेलगाड़ी के प्लेटफार्म छोड़ते ही यह सम्बंध दूर हो जाता है।

3 समवाय दो वस्तुओं का आवश्यक सम्बंध है जैसे गुलाब और गुलाब की सुगन्ध के बीच का सम्बंध आवश्यक सम्बंध है।संयोग आकस्मिक सम्बंध है जैसे दो विपरीत दिशाओं से दो गेंदे आकर मिलती हैं वह अकस्मात होता है।एक गेंद के अभाव में भी दूसरी गेंद की सत्ता विद्यमान रहती है।

4 समवाय सम्बंध पारस्परिक नहीं होता जबकि संयोग पारस्परिक होता है।हाथ और कलम के संयुक्त होने पर जो सम्बंध होता है वह संयोग सम्बन्ध है यहाँ दोनों एक दूसरे से संयुक्त हैं। समवाय में ऐसी बात नहीं होती जैसे गुण द्रव्य में समवेत होता है,द्रव्य गुण में नहीं रहता।

संयोग को एक गुण माना गया है जबकि समवाय एक स्वतन्त्र पदार्थ।समवाय को समवेत वस्तुओं से सम्बन्ध करने के लिये दूसरे समवाय की जरूरत नहीं होती।डॉo राधाकृष्णन ने समवाय को आन्तरिक सम्बन्ध कहा है,"संयोग बाह्य सम्बन्ध है जबकि समवाय आन्तरिक सम्बन्ध है।जिन चीजों का संयोग होता है वे एक दूसरी से भिन्न होती हैं और उनसे एक सच्ची इकाई का निर्माण होता है"।

समवाय को आन्तरिक संबंध कहना भ्रामक है। आन्तरिक संबंध वह होता है जो संबंधित वस्तुओं के स्वभाव का अंग होता है ऐसी संबंधित वस्तुएं एक दूसरे से अलग नहीं रह सकती। आंतरिक संबंध का मतलब यह निकलता है कि संबंधित चीजें परस्पर आश्रित हैं लेकिन समवाय संबंध में यह बात नहीं है।प्रोo हिरीयाना ने समवाय को वाह्य संबंध कहा है वह वाह्य संबंध इसलिए है कि उसके द्वारा संबंधित एक चीज दूसरी से अलग रह सकती है । इस तरह वैशेषिक दर्शन में समवाय को एक स्वतन्त्र पदार्थ के रूप में माना गया है।